जयपुर सिटी: 217-2025 - 27 | RNI No. RAJHIN/2007/19809

पाक्षिक

कायस्थ टुडे

राजस्थान सरकार से विज्ञापन के लिए मान्यता प्राप्त

आप पढ़ रहे हैं समाज का सबसे विश्वसनीय और नंबर 1 अखबार

डाक प्रेषण तिथि 3 और 18

kayasthatoday@gmail.com

वर्ष : 20 अंक : 13 | जयपुर, शुक्रवार 16 अक्टूबर 2026 | पृष्ठ : 04 / मूल्य: 10 रुपए

कायस्थ टुडे

सदस्यता शुल्क

आजीवन	5000/- रुपए
तीन वर्ष	500/- रुपए
एक वर्ष	200/- रुपए

नवीन सदस्यता एवं सदस्यता नवीनीकरण के लिए पेटीएम मोबाइल नम्बर 9772781450 पर कीजिए या बैंक में जमा करवाये।

KAYASTHA TODAY
INDIAN BANK
A/C NO- 759923107
IFC CODE IDIB000M158
MANSAROWAR, JAIPUR
PIN CODE: 302020

अपने व्यापार/प्रतिष्ठान का विज्ञापन देकर लाभ उठायें।

संपादकीय कार्यालय
90/132, 'आशीर्वाद',
पटेल मार्ग, अग्रवाल फार्म, मानसरोवर,
जयपुर-302020
ई-मेल :
kayasthatoday@gmail.com

कायस्थ टुडे के आजीवन सदस्य डॉ. अशोक श्रीवास्तव



कायस्थ टुडे

नोएडा। सामाजिक और सांस्कृतिक परिदृश्य में डॉ. अशोक श्रीवास्तव एक ऐसा नाम हैं, जिन्होंने सेवा, संगठन और सामाजिक चेतना को अपने जीवन का मूल मंत्र बनाया है। नवरत्न फाउंडेशन्स के राष्ट्रीय अध्यक्ष के रूप में वे शिक्षा, महिला सशक्तिकरण, प्रतिभा प्रोत्साहन, वरिष्ठ नागरिक सम्मान और जनसेवा के अनेक अभियानों का सफल नेतृत्व कर रहे हैं। उनकी पहचान केवल एक समाजसेवी की नहीं, बल्कि ऐसे सामाजिक चिंतक की है, जिन्होंने समाज के वंचित और जरूरतमंद वर्गों को मुख्यधारा से जोड़ने का सतत प्रयास किया है।

हालांकि उनकी सामाजिक पहचान का एक महत्वपूर्ण और विशेष पक्ष कायस्थ समाज से उनका गहरा जुड़ाव भी है। जयपुर से प्रकाशित चित्रांश समाज के देश के अग्रणी और प्रतिष्ठित पाक्षिक समाचार-पत्र'कायस्थ टुडे' से उनका संबंध इसकी स्थापना और प्रकाशन के प्रारंभिक चरण से रहा है। वे आरंभ से ही इसके विशिष्ट सदस्य रहे तथा बाद में उन्हें आजीवन सदस्यता प्रदान की गई। यह केवल एक औपचारिक सदस्यता नहीं, बल्कि कायस्थ समाज के सामाजिक, शैक्षिक और वैचारिक उत्थान के प्रति उनकी प्रतिबद्धता का प्रमाण है।

'कायस्थ टुडे' देशभर के चित्रांश एवं कायस्थ समाज की गतिविधियों, उपलब्धियों, सामाजिक चिंताओं और बौद्धिक विमर्श का महत्वपूर्ण मंच माना जाता है। ऐसे प्रतिष्ठित प्रकाशन से प्रारंभ से जुड़े रहना इस बात को दर्शाता है कि डॉ. अशोक श्रीवास्तव केवल समाज सेवा के क्षेत्र में ही नहीं, बल्कि समाज की वैचारिक चेतना और सामाजिक एकजुटता को मजबूत करने के प्रयासों में भी सक्रिय भूमिका निभाते रहे हैं।

डॉ. अशोक श्रीवास्तव पिछले कई दशकों से निःस्वार्थ भाव से समाज सेवा के कार्यों में सक्रिय हैं। उनके नेतृत्व में नवरत्न फाउंडेशन्स ने महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने, आर्थिक रूप से कमजोर बच्चों को शिक्षा से जोड़ने तथा विभिन्न सामाजिक वर्गों के लिए कौशल विकास कार्यक्रम संचालित किए हैं। संस्था द्वारा सिलाई प्रशिक्षण केंद्र, कंप्यूटर प्रशिक्षण केंद्र, महिला शिक्षा केंद्र एवं अन्य जनोपयोगी परियोजनाएं संचालित की है ।संस्था द्वारा आयोजित 'समर्पण' सम्मान समारोह तथा 'जश्न-ए-तजुर्बात' जैसे कार्यक्रम सामाजिक सम्मान और जनभागीदारी के उत्कृष्ट उदाहरण बन चुके हैं।

डॉ. अशोक श्रीवास्तव की विशेषता यह है कि वे सेवा को दान नहीं, बल्कि सामाजिक सशक्तिकरण का माध्यम मानते हैं। उनका मानना है कि समाज का वास्तविक विकास तभी संभव है, जब शिक्षा, अवसर और सम्मान समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुंचे। यही सोच उनके कार्यों में स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। डॉ.श्रीवास्तव का व्यक्तित्व समाज सेवा, सामाजिक जागरण और कायस्थ समाज के प्रति समर्पण का सशक्त उदाहरण माना जाता है। नवरत्न फाउंडेशन्स के माध्यम से जनसेवा और'कायस्थ टुडे' से वैचारिक जुड़ाव, दोनों ही उनके व्यापक सामाजिक दृष्टिकोण को रेखांकित करते हैं। वे उन चुनिंदा व्यक्तित्वों में शामिल हैं, जिन्होंने सेवा, संगठन और समाज जागरण को एक साथ जोड़कर अपने कार्यों से एक विशिष्ट पहचान स्थापित की है।

ओम प्रकाश माथुर केरलम के राज्यपाल



कायस्थ टुडे

नई दिल्ली। राष्ट्रपति दौपदी मुर्मु ने सोमवार को 6 राज्यों के राज्यपालों की नियुक्ति की घोषणा की।

राष्ट्रपति भवन की ओर से जारी विज्ञप्ति के अनुसार ओम प्रकाश माथुर को केरलम, सुधा यादव को कर्नाटक, ब्रज मोहन राम को ओडिशा, दुष्यंत गौतम को सिक्किम,राजेंद्र विश्वनाथ आर्लेकर को तमिलनाडु और डॉ. ढाल सिंह को उत्तराखंड के राज्यपाल के तौर पर नियुक्त किया गया है। इन नियुक्तियों से जुड़े आदेश संबंधित राज्यपालों के अपने-अपने पदों का कार्यभार संभालने की तारीख से प्रभावी होंगे।



अखिल भारतीय कायस्थ महासभा एवं श्री चित्रगुप्त ज्ञान मंदिर, बापू नगर ने मंदिर परिसर में स्थित पूर्व प्रधानमंत्री स्वर्गीय लाल बहादुर शास्त्री जी की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर श्रद्धांजलि अर्पित की गई। इस अवसर पर अखिल भारतीय कायस्थ महासभा के राष्ट्रीय संरक्षक बी.के. माथुर ने अवध बिहारी माथुर को राष्ट्रीय संरक्षक मनोनयन का पत्र प्रदान किया। महासभा के प्रदेश कार्यकारी अध्यक्ष प्रमोद श्रीवास्तव,सुनील माथुर,प्रमोद दत्त,गोपेश दत्त,सुरेश सक्सेना सहित गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे। ▪ कायस्थ टुडे

जरूरतमंद लोगों को भोजन प्रसादी वितरण



जयपुर। **(कायस्थ टुडे)**। नर सेवा नारायण सेवा के बैनर तले कल जरूरतमंद लोगों को भोजन प्रसादी वितरण किया गया । युगल किशोर नेहवारिया, जगदीश प्रकाश माथुर ,विजेन्द्र माथुर, साकेत माथुर, संजीव माथुर, सुनील माथुर, महेश प्रकाश माथुर, विमल माथुर सहित अन्य भामाशाहों ने बांगड़ अस्पताल के बाहरक्षाद्ध पक्ष की पित्त कार्य अमावस्या पर जरूरतमंद लोगों को 501 किलो दूध की खीर,35 किलो कंगन, 550 कचोरी, ओर 51 किलो आटे की पुड़ी, एवं श्रीखंड, एवं पानी की बोतल वितरण की गई।

गरबा महोत्सव 25 अक्टूबर को

जयपुर (कायस्थ टुडे)। कायस्थ सभा प्रताप नगर की ओर से 25 अक्टूबर को दा पिंकसिटी हैरिटेज रेस्टोरेंट एंड कैफे में गोपीनाथ हास्पितल के पास सेक्टर 8 प्रताप नगर में शाम साढे पांच बजे से भव्य गरबा महोत्सव आयोजित किया जा रहा है। आयोजन समिति के अध्यक्ष अवध बिहारी माथुर के अनुसार गरबा महोत्सव में मनमोहक गरबा एंव डाडिंया,पारम्परिक परिधान व संगीत, ढोल की ताल पर सभी उम्र के लोगों के लिए उत्साह उमंग से लबरेज आयोजन होगा। महोत्सव में भाग लेने का शुल्क प्रति व्यक्ति तीन सौ पंचास रूपए रखा गया है। अधिक जानकारी के लिए मोबाइल नम्बर 92516 26485 पर सम्पर्क करे ।

शहीद मेजर आलोक माथुर की 23 वीं पुण्यतिथि पर 'शहीद स्मृति वंदन' कार्यक्रम



शहीद मेजर आलोक माथुर 'सेना मेडल' मेमोरियल समिति की ओर से बुधवार को अमर जवान ज्योति, जनपद, जयपुर पर शहीद मेजर आलोक माथुर की 23 वीं पुण्यतिथि पर 'शहीद स्मृति वंदन' कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि दौलत राम जी अटल, डी.आई.जी. राजस्थान थे तथा अध्यक्षता संरक्षक मंजू शर्मा ने की। समिति अध्यक्ष जयपाल सिंह मंडोता व सचिव मुकेश दत्त माथुर ने बताया कि इस अवसर पर शहीद की वीरांगना प्रगति माथुर, भाई-भाभी तरुण एवं एकता माथुर, समिति संरक्षक मंजू शर्मा सहित अन्य गणमान्य अतिथि उपस्थित रहे। राज्य स्तरीय पुरस्कार मिलने पर सचिव मुकेश दत्त माथुर का विभिन्न कायस्थ संस्थाओं ने अभिनंदन भी किया

कार्यक्रम संयोजक नितेश दत्त माथुर ने बताया कि कार्यक्रम में 10 शहीद परिवारों, 25 मेधावी विद्यार्थियों सहित 5 उल्लेखनीय सेवा करने वाले व्यक्तियों को बुके, मेडल, स्मृति चिन्ह एवं सर्टिफिकेट देकर सम्मानित किया गया। शहीद मेजर आलोक माथुर राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय एवं पेन्सी चिल्ड्रन एकेडमी मुरलीपुरा के विद्यार्थियों ने देशभक्ति से सराबोर मनमोहक प्रस्तुतियों से उपस्थित जनता को मंत्रमुग्ध कर दिया।अतिथियों ने शहीद के चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित की एवं सचिव मुकेश दत्त माथुर ने समिति की गतिविधियों पर प्रकाश डाला। समिति अध्यक्ष जयपाल सिंह मांडोता ने शहीद मेजर आलोक माथुर की जीवनी पर प्रकाश डाला।इवेंट कोऑर्डिनेटर शिप्रा माथुर सहित भारती माथुर, रूपा माथुर, ऋचा माथुर में रहे। कार्यक्रम उद्घोषक जयपाल सिंह मंडोता ने की।



अजमेर शहर जिला उपाध्यक्ष भारती श्रीवास्तव ने बीजेपी कार्यकर्ताओं और चित्रांश समाज के गणमान्य नागरिकों के साथ राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी एवं पूर्व प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री जी की जयंती पर श्रद्धा सुमन अर्पित किए। ▪ कायस्थ टुडे



अजमेर कायस्थ समाज द्वारा HKH स्कूल से शास्त्री उद्यान तक रैली निकाल कर लाल बहादुर शास्त्री जी को माल्यार्पण कर याद किया गया वहीं समाज ने कायस्थ श्मशान में वृक्षारोपण कर शास्त्री जी एवं स्व विष्णु प्रसाद माथुर को माल्यार्पण कर श्रद्धांजलि देकर विष्णु माथुर जी को उनके श्मशान में दिए अमूल्य योगदान के लिए याद किया गया।

▪ कायस्थ टुडे

केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह से मिले डॉ. अनूप श्रीवास्तव



कायस्थ टुडे

नई दिल्ली। केन्द्रीय गृहमंत्री अमित शाह से अखिल भारतीय कायस्थ महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. अनूप श्रीवास्तव ने शिष्टाचार भेंट की । बीजेपी के एक कार्यक्रम के दौरान डॉ. अनूप श्रीवास्तव ने शाह से मुलाकात कर सामाजिक एवं राष्ट्रीय विषयों पर संवाद किया। डॉ. अनूप श्रीवास्तव ने अखिल भारतीय कायस्थ महासभा की सामाजिक गतिविधियों, संगठनात्मक कार्यों तथा समाजहित में किए जा रहे प्रयासों से भी अवगत कराया। मुलाकात के दौरान अखिल भारतीय कायस्थ महासभा की सामाजिक गतिविधियों, संगठनात्मक कार्यों तथा समाजहित में किए जा रहे प्रयासों से अवगत कराया।

डॉ. श्रीवास्तव ने कहा कि राष्ट्रहित, सामाजिक समरसता और समाज के सर्वांगीण विकास के लिए सभी वर्गों की सक्रिय सहभागिता आवश्यक है। उन्होंने कायस्थ समाज की सामाजिक, शैक्षणिक एवं राष्ट्र निर्माण में भूमिका को भी रेखांकित किया।केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह से हुई यह शिष्टाचार भेंट सौहार्दपूर्ण एवं सकारात्मक वातावरण में संपन्न हुई। इस मुलाकात को सामाजिक एवं राष्ट्रीय सरोकारों के दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण माना जा रहा है।

■ रिपोर्ट जनार्दन माथुर, राष्ट्रीय सचिव



कायस्थ टुडे के विशिष्ट सदस्य



श्रीमती गुन्ना माथुर, श्याम नगर जयपुर



श्री हर्ष स्वरूप माथुर, कृष्णा सागर कालोनी मानसरोवर, जयपुर



श्री पवित्र माथुर, रजत पथ, मानसरोवर, जयपुर

संपादकीय

कॉलोनियों की बदहाली पर मातम नहीं, समितियां बनाइए जनाब!



जब जिम्मेदार संस्थाएं सो जाएं, तब जागरूक नागरिकों को आगे आना ही पड़ता है। हमारे शहरों की कॉलोनियां आजकल अजीब दौर से गुजर रही हैं। सड़कें टूटी हैं, नालियां जाम हैं, स्ट्रीट लाइटें बंद हैं, पार्कों पर अतिक्रमण है, आवारा पशु सड़कों पर लोकतंत्र का मुक्त आनंद ले रहे हैं और कचरे के ढेर विकास की नई पहचान बने हुए हैं। लेकिन चिंता की कोई बात नहीं है। संबंधित विभाग पूरी तरह सक्रिय हैं। सक्रियता का प्रमाण यह है कि हर शिकायत पर एक आश्वासन और हर आश्वासन पर एक नई प्रतीक्षा मुफ्त में उपलब्ध है।

दरअसल, हमारे यहां समस्याओं का समाधान कम और उनका संरक्षण अधिक होता है। सड़क टूट जाए तो महीनों तक उसे 'ऐतिहासिक धरोहर' की तरह संभालकर रखा जाता है। नाली जाम हो जाए तो उसे स्थानीय पर्यटन स्थल का दर्जा मिल जाता है। बरसात में सड़क पर जलभराव हो तो अधिकारी उसे 'अस्थायी जलाशय' मानकर संतोष कर लेते हैं।सबसे दिलचस्प बात यह है कि कॉलोनियों में रहने वाले नागरिक भी कम जिम्मेदार नहीं हैं। वे हर समस्या पर चर्चा करेंगे, राजनीति पर बहस करेंगे, नगर निगम को कोसेंगे, पार्षद को अयोग्य बताएंगे, विधायक को निकम्मा घोषित करेंगे, लेकिन अपनी कॉलोनी के लिए पांच लोगों की बैठक बुलाने को कह दीजिए, तो ऐसा सन्नाटा छा जाएगा मानो राष्ट्र की गुप्त सुरक्षा रणनीति पूछ ली हो।सच यह है कि हमारी कॉलोनियां समस्याओं से नहीं, बल्कि सामूहिक उदासीनता से पीड़ित हैं।

प्रशासन का हाल यह है कि शिकायत दर्ज होते ही फाइल यात्रा पर निकल पड़ती है। पहले बाबू के पास, फिर अफसर के पास, फिर निरीक्षण के लिए, फिर स्वीकृति के लिए, फिर बजट के लिए और अंत में किसी अलमारी के लिए। समस्या जहां थी, वहीं रहती है। केवल कागजों में उसका विकास हो जाता है।चुनाव के दिनों में यही कॉलोनियां लोकतंत्र की धुरी बन जाती हैं। नेता गलियों में पैदल घूमते हैं, बच्चों को दुलारते हैं, बुजुर्गों का आशीर्वाद लेते हैं और विकास के ऐसे सपने दिखाते हैं कि स्विट्जरलैंड भी शर्मिंदा हो जाए। लेकिन चुनाव खत्म होते ही सड़क का गड्ढा और जनप्रतिनिधि दोनों पांच साल के लिए गहरे चिंतन में चले जाते हैं।

ऐसी स्थिति में कॉलोनियों के लिए सबसे बड़ी जरूरत है स्थानीय नागरिक समितियां।लेकिन यहां एक खतरा भी है। समिति का नाम सुनते ही कुछ लोग इसे राजनीति का लघु संस्करण बनाने लगते हैं। अध्यक्ष कौन बनेगा, महासचिव कौन बनेगा, फोटो में कौन आगे खड़ा होगा और मीडिया में किसका नाम छपेगा, इन सवालों में असली समस्या फिर नाली में बह जाती है।इसलिए समिति ऐसी होनी चाहिए जो काम करे, केवल व्हाट्सएप पर 'गुड मॉर्निंग' संदेश न भेजे।एक सक्रिय कॉलोनी समिति सड़क, सफाई, जलापूर्ति, स्ट्रीट लाइट, सुरक्षा, पार्कों और अतिक्रमण जैसी समस्याओं का दस्तावेज तैयार कर सकती है। संबंधित विभागों पर नियमित दबाव बना सकती है और हर कार्य की प्रगति पर नजर रख सकती है। अधिकारी भी जानते हैं कि अकेले शिकायतकर्ता को टालना आसान है, लेकिन संगठित नागरिक समूह को नजरअंदाज करना उतना सरल नहीं होता।

विडंबना देखिए, विदेशों में लोग अपने मोहल्ले को बेहतर बनाने के लिए स्वयं आगे आते हैं, जबकि हमारे यहां अक्सर लोग अपने घर के सामने का कचरा पड़ोसी के दरवाजे की ओर सरका देने को ही सामाजिक योगदान मान लेते हैं।कई कॉलोनियों में लोग स्वयं नियम तोड़ते हैं। कोई सड़क पर निर्माण सामग्री डाल देता है, कोई नाली में प्लास्टिक भर देता है, कोई पार्क पर कब्जा कर लेता है, कोई वाहन ऐसे खड़ा करता है मानो सड़क उसके दादा की विरासत हो। फिर यही लोग शिकायत करते हैं कि व्यवस्था खराब है। आखिर व्यवस्था मंगल ग्रह से तो आएगी नहीं, वह इसी समाज से निकलती है।समिति का एक बड़ा लाभ यह भी होगा कि नागरिकों को केवल अधिकार ही नहीं, कर्तव्य भी याद आएंगे। क्योंकि शहर केवल सरकार नहीं चलाती, नागरिक भी चलाते हैं। यदि प्रशासन सो रहा है और नागरिक भी खर्राटे मार रहे हैं, तो विकास की उम्मीद सपनों में ही की जा सकती है।आज जरूरत इस बात की है कि हर कॉलोनी में जागरूक लोगों का समूह बने, नियमित बैठकें हों, समस्याओं की प्राथमिकता तय हो और अधिकारियों से जवाब मांगा जाए। लोकतंत्र का अर्थ सिर्फ वोट डालना नहीं है। लोकतंत्र का असली अर्थ है, वोट के बाद भी सवाल पूछते रहना।

कॉलोनियों की बदहाली पर आंसू बहाने से न सड़क बनेगी, न नाली साफ होगी और न स्ट्रीट लाइट जलेगी। यदि नागरिक सचमुच बदलाव चाहते हैं, तो उन्हें दर्शक दीर्घा से बाहर निकलना होगा। समितियां बनानी होंगी, आवाज उठानी होगी और व्यवस्था को उसकी जिम्मेदारी याद दिलानी होगी। वरना आने वाले वर्षों में हमारी कॉलोनियां विकास के मॉडल नहीं, बल्कि उपेक्षा के संग्रहालय बन जाएंगी, जहां गड्ढे स्मारक होंगे और शिकायतें विरासत।

प्रसंग: दशहरे पर बहन भाई के क्यूं करती है टीका

विजयादशमी की परंपरा में छिपा है स्नेह, मंगलकामना और पारिवारिक एकता का संदेश



भारत के त्योहार केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं हैं, बल्कि वे सामाजिक संबंधों, पारिवारिक मूल्यों और सांस्कृतिक परंपराओं को भी सुदृढ़ करते हैं। दशहरा या विजयादशमी ऐसा ही एक महत्वपूर्ण पर्व है, जो बुराई पर अच्छाई की विजय का प्रतीक माना जाता है। देश के विभिन्न क्षेत्रों में इस पर्व को अलग-अलग परंपराओं के साथ मनाया जाता है। राजस्थान, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, हिमाचल प्रदेश और उत्तर भारत के कई क्षेत्रों में दशहरे के दिन या उसके आसपास बहन द्वारा भाई को टीका लगाने की परंपरा विशेष रूप से प्रचलित है। यह परंपरा केवल एक रस्म नहीं, बल्कि भाई-बहन के अटूट प्रेम, विश्वास और मंगलकामना का प्रतीक है।

बहन द्वारा भाई के माथे पर लगाया जाने वाला टीका शुभता, विजय और दीर्घायु का प्रतीक माना जाता है। भारतीय संस्कृति में माथे का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है। तिलक या टीका केवल सम्मान का चिह्न नहीं है, बल्कि यह सकारात्मक ऊर्जा, संरक्षण और शुभकामनाओं का भी प्रतीक है। जब बहन अपने भाई के माथे पर टीका लगाती है, तो वह उसके सुख, समृद्धि, सफलता और लंबे जीवन की कामना करती है।

इस परंपरा के पीछे कई लोक मान्यताएं और पौराणिक कथाएं प्रचलित हैं। माना जाता है कि विजयादशमी का दिन विजय और शुभ कार्यों के आरंभ का दिन होता है। प्राचीन काल में राजा और योद्धा युद्ध या विजय अभियान पर जाने से पहले अपने परिवार की महिलाओं से विजय तिलक लगवाते थे। यह तिलक साहस, सफलता और सुरक्षा का प्रतीक माना जाता था। समय के साथ यह परंपरा सामान्य परिवारों में भी प्रचलित हो गई और बहन द्वारा भाई को विजय तिलक लगाने की प्रथा विकसित हुई।

राजस्थान और कुछ अन्य प्रदेशों में इसे 'विजय तिलक' या 'दशहरा टीका' भी कहा जाता है। इस दिन बहनें अपने भाइयों के माथे पर रोली, चावल और हल्दी से तिलक लगाकर उनकी कुशलता की प्रार्थना करती हैं। बदले में भाई अपनी बहन की रक्षा, सम्मान और सहयोग का संकल्प लेता है। यह परंपरा कहीं न कहीं रक्षाबंधन की भावना का भी विस्तार प्रतीत होती है।

भारतीय लोक संस्कृति में यह विश्वास भी किया जाता है कि दशहरे का दिन नकारात्मक शक्तियों पर सकारात्मक शक्तियों की विजय का दिन है। ऐसे में बहन द्वारा लगाया गया टीका भाई के जीवन में आने वाली बाधाओं, संकटों और नकारात्मक प्रभावों से रक्षा के लिए मंगलकामना का प्रतीक बन जाता है। इस अवसर पर बहनें अपने भाइयों की सफलता और उन्नति की कामना करती हैं तथा परिवार में सुख-शांति के लिए प्रार्थना करती हैं।

दशहरा पर होने वाला यह तिलक केवल धार्मिक महत्व नहीं रखता, बल्कि सामाजिक दृष्टि से भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। आज के व्यस्त और बदलते जीवन में परिवारों के बीच भावनात्मक दूरी बढ़ती जा रही है। ऐसे त्योहार रिश्तों को मजबूत बनाने का अवसर प्रदान करते हैं। जब बहन अपने भाई का टीका करती है, तो यह केवल एक परंपरा का निर्वाह नहीं होता, बल्कि दोनों के बीच स्नेह, विश्वास और आत्मीयता का पुनर्स्मरण भी होता है।

ग्रामीण क्षेत्रों में आज भी दशहरा टीका एक छोटे पारिवारिक उत्सव के रूप में मनाया जाता है। बहनें विशेष रूप से पूजा की थाली सजाती हैं, दीप प्रज्वलित करती हैं और अपने भाइयों को तिलक लगाकर मिठाई खिलाती हैं। परिवार के अन्य सदस्य भी इस अवसर पर उपस्थित रहते हैं। इस प्रकार यह परंपरा पारिवारिक एकता और सामूहिक आनंद का माध्यम बन जाती है।

आधुनिक समय में भले ही जीवनशैली में परिवर्तन आया हो, लेकिन इस परंपरा का महत्व कम नहीं हुआ है। आज भी अनेक परिवारों में बहनें दूर रहने वाले भाइयों को फोन, वीडियो कॉल या संदेशों के माध्यम से शुभकामनाएं भेजती हैं। इससे यह स्पष्ट होता है कि तकनीक बदल सकती है, लेकिन रिश्तों की भावनाएं और सांस्कृतिक मूल्य सदैव बने रहते हैं।

दशहरा हमें भगवान श्रीराम की विजय, मां दुर्गा की शक्ति और धर्म की प्रतिष्ठा का संदेश देता है। इसी क्रम में बहन द्वारा भाई को लगाया जाने वाला टीका इस पर्व को एक भावनात्मक और पारिवारिक आयाम प्रदान करता है। यह परंपरा हमें सिखाती है कि विजय केवल युद्धभूमि में नहीं, बल्कि प्रेम, सद्भाव और रिश्तों के संरक्षण में भी निहित होती है।

दशहरा पर बहन द्वारा भाई को टीका लगाने की परंपरा भारतीय संस्कृति की सुंदर और भावनात्मक धरोहर है। यह केवल एक धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि भाई-बहन के पवित्र रिश्ते, परस्पर प्रेम, सम्मान और मंगलकामना का प्रतीक है। विजयादशमी के शुभ अवसर पर लगाया गया यह तिलक जीवन में सफलता, सुरक्षा और समृद्धि की कामना के साथ-साथ परिवार की एकता और सांस्कृतिक मूल्यों को भी मजबूत करता है। वास्तव में, यह परंपरा भारतीय पारिवारिक संस्कृति की आत्मीयता और संवेदनशीलता का जीवंत उदाहरण है।

पूर्व प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री जी के बताए मार्ग पर चलने का किया आहवान



कायस्थ टुडे

पटना। चित्रगुप्त समाज (बिहार, झारखंड) के प्रांगण में 'लाल बहादुर शास्त्री विचार मंच' के तत्वावधान में भारत के पूर्व प्रधानमंत्री एवं महामानव लाल बहादुर शास्त्री जी की 122वीं जयंती अत्यंत श्रद्धा के साथ मनाई गई। अखिल भारतीय कायस्थ महासभा के प्रदेश अध्यक्ष राकेश कुमार सिन्हा ने लाल बहादुर शास्त्री जी की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर श्रद्धांजलि अर्पित की। शास्त्री जी के अमर नारे 'जय जवान, जय किसान' के संदेश को रेखांकित करते हुए देश के किसानों और जवानों के प्रति उनके दूरदर्शी दृष्टिकोण की सराहना की गई। वक्ताओं ने कहा कि शास्त्री जी के निष्काम भाव, सच्ची निष्ठा, कर्तव्यपरायणता और दृढ़ संकल्प शक्ति ने भारत को एक नई दिशा दी और विश्व पटल पर देश का नाम रोशन किया।

वक्ताओं ने इस बात पर विशेष जोर दिया कि आज के परिदृश्य में आने वाली पीढ़ी को अपने महापुरुषों के जीवन चरित्र और राष्ट्र के प्रति उनके समर्पण के बारे में जागरूक करना अत्यंत आवश्यक है। वक्ताओं ने चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि हम अपनी नई पीढ़ी को अपने पूर्वजों और देश की महान विभूतियों—जैसे डॉ. राजेंद्र प्रसाद, स्वामी विवेकानंद, मुंशी प्रेमचंद, लोकनायक जयप्रकाश नारायण, नेताजी सुभाष चंद्र बोस, प्रफुल्ल चंद्र चाकी और बटुकेश्वर दत्त—के योगदानों के बारे में पूरी तरह नहीं बता पा रहे हैं। आज आवश्यकता है कि बच्चों को इन महापुरुषों की जीवनी और उनके आदर्शों से परिचित कराया जाए ताकि वे राष्ट्र निर्माण में अपनी सक्रिय भूमिका निभा सकें।

कार्यक्रम का संचालन संस्था के महासचिव पुष्कर श्रीवास्तव एवं विशाल वर्मा द्वारा किया गया, जबकि मंटू द्वारा धन्यवाद ज्ञापित किया गया । कार्यक्रम में आशुतोष नारायण सिन्हा,अशोक कुमार सिन्हा,सुभाष चंद्र सिन्हा,शशि बलदियार (भाजपा नेता),राजीव रंजन(अध्यक्ष, चित्रगुप्त समाज) दीपक कुमार सिन्हा (अध्यक्ष, मृदुल राज फाउंडेशन),पंकज सिन्हा,ज्ञानरंजन सिंह,विंध्यवासिनी सिन्हा,सुनील कुमार सिन्हा,विजय श्रीवास्तव,पप्पू भैया,राकेश कुमार सिन्हा (अधिवक्ता),रिषभ श्रीवास्तव ,अभिषेक आनंद, रवि अम्बष्ट,आलोक कुमार सहित अन्य गणमान्य नागरिक मौजूद रहे ।

आमेर की शिला माता मंदिर: जयपुर राजघराने की आराध्य देवी



कायस्थ टुडे

जयपुर। अरावली की पहाड़ियों के बीच शान से खड़े आमेर दुर्ग की ऐतिहासिक विरासत में शिला माता मंदिर आस्था का ऐसा केंद्र है, जहां भक्तों की श्रद्धा सदियों से अटूट बनी हुई है। जयपुर के पूर्व राजपरिवार की आराध्य देवी शिला माता के दरबार में शारदीय नवरात्र के दौरान विशेष धार्मिक उल्लास देखने को मिलता है। मां के दर्शन और आशीर्वाद की कामना लेकर बड़ी संख्या में श्रद्धालु यहां पहुंचते हैं। इतिहास, लोक आस्था और राजस्थानी संस्कृति का अनूठा संगम यह मंदिर न केवल जयपुर की धार्मिक पहचान है, बल्कि आमेर की गौरवशाली परंपरा का भी जीवंत प्रतीक है।

राजस्थान की राजधानी जयपुर से सटे ऐतिहासिक आमेर दुर्ग में स्थित शिला माता मंदिर आस्था, इतिहास और राजस्थानी संस्कृति का प्रमुख केंद्र है। मां दुर्गा के स्वरूप शिला माता को जयपुर के पूर्व राजपरिवार की आराध्य देवी माना जाता है। शारदीय नवरात्र और चैत्र नवरात्र के दौरान यहां विशेष पूजा-अर्चना होती है तथा बड़ी संख्या में श्रद्धालु माता के दर्शन के लिए पहुंचते हैं। मंदिर में विराजमान माता की प्रतिमा के प्रति भक्तों की गहरी आस्था है और इसे आमेर की धार्मिक पहचान का महत्वपूर्ण हिस्सा माना जाता है।

शिला माता मंदिर का इतिहास आमेर के शासक राजा मानसिंह प्रथम से जुड़ा माना जाता है। प्रचलित मान्यता के अनुसार, राजा मानसिंह बंगाल अभियान के दौरान मां काली की प्रतिमा लेकर आए थे। इसके बाद आमेर में माता की स्थापना की गई। मंदिर की प्रतिमा शिला पर उकेरी गई मानी जाती है, इसी कारण देवी का नाम शिला माता पड़ा। मंदिर से जुड़ी ऐतिहासिक परंपराएं आज भी श्रद्धालुओं के बीच विशेष महत्व रखती हैं।

नवरात्र के दौरान शिला माता मंदिर में दर्शन का विशेष महत्व माना जाता है। इस अवसर पर मंदिर में पूजा-अर्चना और धार्मिक अनुष्ठानों के लिए श्रद्धालु पहुंचते हैं। माता के दर्शन के साथ भक्त आमेर दुर्ग की ऐतिहासिक विरासत से भी रूबरू होते हैं। मंदिर की धार्मिक महत्ता और इससे जुड़ी लोकमान्यताएं इसे जयपुर के प्रमुख आस्था स्थलों में स्थान दिलाती हैं।

शिला माता मंदिर केवल पूजा का स्थल नहीं, बल्कि आमेर के गौरवशाली अतीत और राजस्थानी परंपराओं का प्रतीक भी है। सदियों से चली आ रही श्रद्धा के कारण यह मंदिर आज भी देश-विदेश से आने वाले श्रद्धालुओं और पर्यटकों को आकर्षित करता है।

करवा चौथ: प्रेम, विश्वास और भारतीय संस्कृति का अनुपम पर्व



भारत की सांस्कृतिक परंपरा में अनेक ऐसे पर्व हैं जो केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि मानवीय भावनाओं और सामाजिक मूल्यों के प्रतीक भी हैं। इन्हीं महत्वपूर्ण पर्वों में करवा चौथ का विशेष स्थान है। यह त्योहार मुख्य रूप से विवाहित महिलाओं द्वारा अपने पति की दीर्घायु, सुख-समृद्धि और उत्तम स्वास्थ्य की कामना के लिए मनाया जाता है। प्रेम, विश्वास, त्याग और समर्पण की भावनाओं से ओतप्रोत यह पर्व भारतीय संस्कृति की उस महान परंपरा का प्रतीक है, जिसमें पारिवारिक संबंधों को सर्वोच्च महत्व प्रदान किया गया है।

करवा चौथ का पर्व कार्तिक मास के कृष्ण पक्ष की चतुर्थी तिथि को मनाया जाता है। इस दिन महिलाएं सूर्योदय से लेकर चंद्र दर्शन तक निर्जला व्रत रखती हैं। रात में चंद्रमा को अर्घ्य देने और पति के हाथों जल ग्रहण करने के बाद व्रत का पारण किया जाता है। यह परंपरा सदियों से भारतीय समाज में प्रचलित है और आज भी उतनी ही श्रद्धा और उत्साह के साथ निभाई जाती है।करवा चौथ का महत्व केवल धार्मिक मान्यताओं तक सीमित नहीं है। यह पति-पत्नी के बीच अटूट विश्वास और भावनात्मक जुड़ाव का भी प्रतीक है। विवाह केवल दो व्यक्तियों का नहीं, बल्कि दो परिवारों और दो संस्कृतियों का मिलन होता है। ऐसे में यह पर्व दांपत्य जीवन में प्रेम, सम्मान और एक-दूसरे के प्रति उत्तरदायित्व की भावना को सुदृढ़ करता है। दिनभर का कठिन व्रत यह दर्शाता है कि रिश्तों की मजबूती केवल शब्दों से नहीं, बल्कि समर्पण और त्याग से भी बनती है।

करवा चौथ से जुड़ी अनेक पौराणिक कथाएं प्रचलित हैं। इनमें वीरवती की कथा सबसे अधिक प्रसिद्ध है। मान्यता है कि वीरवती नामक एक स्त्री ने श्रद्धापूर्वक करवा चौथ का व्रत रखा था। परिस्थितिवश उसका व्रत समय से पूर्व भंग हो गया, जिसके परिणामस्वरूप उसके पति पर संकट आ गया। बाद में उसने पुनः विधिपूर्वक व्रत का पालन किया और अपने पति को जीवनदान प्राप्त हुआ। यह कथा व्रत की श्रद्धा, निष्ठा और संकल्प की महत्ता को दर्शाती है।भारतीय समाज में करवा चौथ केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक उत्सव का रूप भी ले चुका है। व्रत से कुछ दिन पहले ही इसकी तैयारियां आरंभ हो जाती हैं। बाजारों में विशेष रौनक देखने को मिलती है। महिलाएं नई साड़ियां, पारंपरिक परिधान, आभूषण, श्रृंगार सामग्री और पूजा की वस्तुएं खरीदती हैं। मेहंदी लगाने की परंपरा इस पर्व की विशेष पहचान है। हाथों में सजी मेहंदी और सोलह श्रृंगार भारतीय नारी की सौंदर्य परंपरा तथा सांस्कृतिक गौरव को प्रदर्शित करते हैं।

करवा चौथ का एक महत्वपूर्ण पक्ष महिलाओं के बीच सामाजिक एकता और आपसी स्नेह भी है। विभिन्न स्थानों पर महिलाएं सामूहिक रूप से पूजा करती हैं, करवा चौथ की कथा सुनती हैं और एक-दूसरे को शुभकामनाएं देती हैं। इससे सामाजिक संबंध मजबूत होते हैं तथा समुदाय में सहयोग और आत्मीयता की भावना विकसित होती है। आधुनिक जीवन की व्यस्तता के बीच ऐसे पर्व पारिवारिक और सामाजिक रिश्तों को जीवंत बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।समय के साथ करवा चौथ के स्वरूप में भी परिवर्तन देखने को मिला है। पहले जहां यह पर्व मुख्य रूप से ग्रामीण और पारंपरिक समाज तक सीमित था, वहीं आज महानगरों और शिक्षित समाज में भी इसका व्यापक प्रभाव दिखाई देता है। आधुनिक युग में कई पति भी अपनी पत्नी के प्रति प्रेम और सम्मान व्यक्त करने के लिए उनके साथ व्रत रखते हैं। यह परिवर्तन इस बात का प्रतीक है कि वैवाहिक जीवन में समानता, सहयोग और पारस्परिक सम्मान का महत्व लगातार बढ़ रहा है।

लोकप्रिय फिल्मों, टेलीविजन धारावाहिकों और सोशल मीडिया ने भी करवा चौथ को नई पहचान दी है। हालांकि पर्व का वास्तविक महत्व केवल बाहरी आडंबर या दिखावे में नहीं, बल्कि उसके मूल भाव में निहित है। यदि प्रेम, विश्वास और सम्मान की भावना अनुपस्थित हो, तो कोई भी परंपरा अपना वास्तविक अर्थ खो देती है। इसलिए करवा चौथ का सार केवल व्रत रखना नहीं, बल्कि जीवनसाथी के प्रति समर्पण और रिश्तों की गरिमा को बनाए रखना है।वर्तमान समय में जब पारिवारिक रिश्तों पर भौतिकवाद और व्यस्त जीवनशैली का प्रभाव बढ़ रहा है, तब करवा चौथ जैसे पर्व हमें रिश्तों के महत्व का स्मरण कराते हैं। यह त्योहार बताता है कि जीवन की वास्तविक खुशियां परिवार, प्रेम और भावनात्मक जुड़ाव में निहित हैं। आपसी विश्वास और समझदारी ही किसी भी वैवाहिक संबंध की सबसे बड़ी शक्ति होती है।



कायस्थ टुडे में प्रकाशित आलेख में लेखक के विचार है। सम्पादक का इससे सरोकार नहीं है। सभी विवादों का न्यायक्षेत्र जयपुर होगा। ■ सम्पादक

मंत्रिमंडल की बैठक... मोदी के 25 साल के जनसेवा काल पर अभिनंदन प्रस्ताव

मोदी काल रिफॉर्म, परफॉर्म और ट्रांसफॉर्म का: सीएम

- मोदी के विजन से प्रदेश को मिल रही विकास की रफ्तार
- जयपुर रिंग रोड उत्तर परियोजना पर खर्च होंगे 11,764 करोड़
- प्रदेश में नौ ग्रीनफील्ड एक्सप्रेस-वे विकसित करने की तैयारी

कायस्थ टुडे

जयपुर। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा की अध्यक्षता में बुधवार को मुख्यमंत्री कार्यालय में हुई मंत्रिमंडल की बैठक में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की 25 वर्षों की अनवरत जनसेवा के लिए अभिनंदन प्रस्ताव पारित किया गया। मुख्यमंत्री ने कहा कि मोदी ने गुजरात के मुख्यमंत्री से लेकर देश के प्रधानमंत्री तक की यात्रा में सुशासन, विकास और जनकल्याण को प्राथमिकता दी है। उनके नेतृत्व में देश में 'रिफॉर्म, परफॉर्म और ट्रांसफॉर्म' की संस्कृति स्थापित हुई है। अनुच्छेद 370 की समाप्ति, श्रीराम मंदिर का निर्माण, आतंकवाद के खिलाफ सर्जिकल स्ट्राइक, एयर स्ट्राइक और ऑपरेशन सिंदूर जैसे फैसलों से भारत की एक मजबूत राष्ट्र के रूप में पहचान बनी है। जी-20 और ब्रिक्स जैसे अंतरराष्ट्रीय मंचों पर भारत की भूमिका मजबूत हुई है। मेक इन इंडिया जैसी पहलों से विनिर्माण और तकनीकी क्षमताओं का विस्तार हुआ है। डिजिटल इंडिया, जीएसटी और जनधन-आधार-मोबाइल की त्रिशक्ति ने आर्थिक प्रक्रियाओं को नई दिशा दी है। प्रधानमंत्री के विजन का लाभ राजस्थान को भी मिल रहा है।



जल सुरक्षा और रोजगार पर फोकस

मुख्यमंत्री ने कहा कि राम जल सेतु लिंक परियोजना से 17 जिलों के तीन करोड़ से अधिक लोगों को पेयजल और लगभग चार लाख हेक्टेयर भूमि को सिंचाई की सुविधा मिलने की संभावना है। यमुना, किशाऊ और नर्मदा जल समझौतों से प्रदेश की जल सुरक्षा को मजबूती मिलेगी। राइजिंग राजस्थान निवेश सम्मेलन में 35 लाख करोड़ के समझौता ज्ञापन हुए, जिनमें से नौ लाख करोड़ रुपए से अधिक की परियोजनाएं धरातल पर उतर चुकी हैं। प्रदेश में अब तक 1.93 लाख सरकारी नियुक्तियां दी जा चुकी हैं, जबकि 1.18 लाख पदों पर भर्ती प्रक्रिया जारी है।

राजस्थान में बुनियादी ढांचे और ऊर्जा पर जोर

मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रदेश में 2,750 किलोमीटर से अधिक लंबाई के नौ ग्रीनफील्ड एक्सप्रेस-वे विकसित हो रहे हैं। जयपुर में यातायात का दबाव कम करने के लिए केंद्र के सहयोग से 11,764 करोड़ की लागत वाली जयपुर रिंग रोड उत्तर परियोजना पूरी की जाएगी। राजस्थान 39.36 गीगावाट की स्थापित सौर ऊर्जा क्षमता के साथ देश में पहले स्थान पर है, जबकि अक्षय ऊर्जा में दूसरे स्थान पर पहुंच गया है। पीएम सूर्य घर मुफ्त बिजली योजना के तहत पांच लाख से अधिक पंजीकरण हो चुके हैं और 3.37 लाख रूफटॉप सौर ऊर्जा संयंत्र स्थापित किए जा चुके हैं।

प्रधानमंत्री मोदी ने किशोरियों के स्वास्थ्य, पोषण और समग्र विकास पर अधिक ध्यान देने का आह्वान किया

कायस्थ टुडे

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने महिला और बाल विकास पर आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय विभागीय शिखर सम्मेलन के समापन सत्र की अध्यक्षता करते हुए सुझाव दिया कि राज्य जिला स्तर और नगर पालिका व महानगर पालिका स्तर पर इसी तरह के 'चिंतन शिविर' आयोजित करके इस मॉडल को आगे बढ़ा सकते हैं। उन्होंने आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं के लिए भी विशेष 'चिंतन शिविर' आयोजित करने का सुझाव दिया, ताकि वे जमीनी स्तर के अपने अनुभव, नए विचार और व्यावहारिक समाधान एक-दूसरे के साथ साझा कर सकें।



पीएम मोदी ने कहा कि राज्य जिला स्तर और नगर पालिका व महानगर पालिका स्तर पर इसी तरह के 'चिंतन शिविर' आयोजित करके इस मॉडल को आगे बढ़ा सकते हैं। उन्होंने आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं के लिए भी विशेष 'चिंतन शिविर' आयोजित करने का सुझाव दिया, ताकि वे जमीनी स्तर के अपने अनुभव, नए विचार और व्यावहारिक समाधान एक-दूसरे के साथ साझा कर सकें।

प्रधानमंत्री की सोच के अनुसार आयोजित विभागीय शिखर सम्मेलनों की श्रृंखला का हिस्सा रहे इस सम्मेलन में राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के मंत्री और वरिष्ठ अधिकारी सम्मिलित हुए। इसमें पोषण और बचपन की देखभाल, बच्चों की सुरक्षा, महिलाओं की सुरक्षा और सशक्तिकरण तथा बेहतर तालमेल के माध्यम से सेवाओं की पहुंच को मजबूत करने जैसे विषयों पर गहन चर्चा की गई।प्रधानमंत्री ने 'जन भागीदारी' पर जोर देते हुए कहा कि आंगनवाड़ी केंद्र को केवल एक अलग-थलग संस्थान के रूप में काम नहीं करना चाहिए, बल्कि इसे सामुदायिक भागीदारी का केंद्र बनना चाहिए। उन्होंने कहा कि आंगनवाड़ी केंद्रों के आस-पास रहने वाले परिवारों को भी विशेष अवसरों पर बच्चों के लिए पौष्टिक भोजन, खिलौने और स्थानीय स्तर पर उपयोगी चीजें देकर योगदान करने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है।

प्रधानमंत्री ने विश्वविद्यालयों और शिक्षण संस्थानों से आंगनवाड़ी केंद्रों के साथ और अधिक जुड़ने का आग्रह किया। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय आस-पास के आंगनवाड़ी केंद्रों को गोद ले सकते हैं और सामाजिक प्रभाव से जुड़े अध्ययन कर सकते हैं। श्री मोदी ने कहा कि इससे छात्रों को योगदान देने का मौका मिलेगा और सेवा वितरण को बेहतर बनाने के लिए उपयोगी जानकारी भी मिलेगी। उन्होंने कहा कि चिकित्सा विद्यार्थी और राष्ट्रीय सेवा योजना और राष्ट्रीय कैडेट कोर के स्वयंसेवक भी इसी तरह आंगनवाड़ी केंद्रों और सामुदायिक पहलों से जुड़ सकते हैं। प्रधानमंत्री ने किशोरियों के स्वास्थ्य, पोषण और सर्वांगीण विकास पर अधिक ध्यान देने की भी बात कही।

प्रधानमंत्री मोदी ने महिलाओं की सुरक्षा से जुड़े मुद्दों पर चर्चा की। उन्होंने महिलाओं की सुरक्षा, सम्मान और सशक्तिकरण के बारे में बच्चों के लिए उम्र के हिसाब से उपयुक्त मॉड्यूल तैयार करने का सुझाव दिया। श्री मोदी ने अलग-अलग विभागों के प्रयासों को मिलाकर रोकथाम के उपायों पर भी जोर दिया।

प्रधानमंत्री ने साफ़-सफ़ाई, स्वास्थ्य और पोषण के बीच गहरे संबंध का उल्लेख करते हुए, देश भर के महिला एवं बाल विकास विभागों से 'स्वच्छता अभियान' की सक्रिय रूप से जिम्मेदारी लेने का आह्वान किया। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि अच्छा स्वास्थ्य और पोषण साफ़-सफ़ाई से ही शुरू होता है और आंगनवाड़ी केंद्र तथा आस-पास के समुदाय इस व्यवहार परिवर्तन को बढ़ावा देने के लिए महत्वपूर्ण मंच बन सकते हैं।

प्रधानमंत्री ने कहा कि महिला सशक्तिकरण के लिए 'वोकल फ़ॉर लोकल' यानी स्थानीय के लिए मुखर और 'एक जिला एक उत्पाद' (ओडीओपी) जैसे राष्ट्रीय आंदोलनों को बढ़ावा दिया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि महिलाओं के समूह और सामुदायिक संस्थाएं स्थानीय उत्पादों, आजीविका और आर्थिक सशक्तिकरण को मजबूत करने में महत्वपूर्ण भागीदार बन सकती हैं।

प्रधानमंत्री ने इस बात पर बल दिया कि महिला एवं बाल विकास मंत्रालय और राज्यों में इसके समकक्ष विभागों को समाज के सबसे बड़े और सबसे महत्वपूर्ण वर्गों में से एक से जुड़ी जिम्मेदारियां सौंपी गई हैं। श्री मोदी ने कहा कि आज आंगनवाड़ी केंद्रों में पल-बढ़ रहे बच्चे ही आगे चलकर युवा और नागरिक बनेंगे जो 'विकसित भारत' का निर्माण करेंगे।

प्रधानमंत्री ने लोकनायक जयप्रकाश नारायण को याद किया

नई दिल्ली (कायस्थ टुडे)। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने लोकनायक जयप्रकाश नारायण की जयंती पर उन्हें याद किया है। उन्होंने कहा कि लोकनायक का प्रभाव कई पीढ़ियों तक रहा और उन्होंने लोगों को यह विश्वास दिलाया कि सार्वजनिक जीवन राष्ट्र के नव-निर्माण का माध्यम बन सकता है। प्रधानमंत्री ने आपातकाल के दौरान लोकनायक जेपी की निडर आवाज और सुशासन तथा समाज के वंचित वर्गों तक पहुँचने के लिए उनकी प्रतिबद्धता पर भी बल दिया। मोदी ने कहा कि 'विकसित भारत' के निर्माण की दिशा में काम करते हुए देश उनके आदर्शों को पूरा करने के लिए प्रतिबद्ध है।



पीएम मोदी ने X पर पोस्ट में कहा; 'लोकनायक जयप्रकाश नारायण को उनकी जयंती पर स्मरण कर रहा हूँ। उनका प्रभाव कई पीढ़ियों तक रहा। उन्होंने लोगों को यह विश्वास दिलाया कि सार्वजनिक जीवन राष्ट्र के नव-निर्माण का माध्यम बन सकता है। आपातकाल के दौरान उनकी निडर आवाज भी उल्लेखनीय थी। लोकनायक जेपी सुशासन सुनिश्चित करने और समाज के हाशिए पर रहने वाले लोगों तक पहुँचने के लिए भी बहुत उत्साहित थे। 'विकसित भारत' के निर्माण की दिशा में काम करते हुए हम उनके आदर्शों को पूरा करने के लिए प्रतिबद्ध हैं।'

प्रसंग | **खाना-खजाना**



साबूदाना खिचड़ी से मखाने की खीर

व्रत के दौरान स्वाद और सेहत का संतुलन बनाए रखना जरूरी है। नौ दिनों तक एक जैसा भोजन करने के बजाय आप साबूदाना खिचड़ी, कुट्टू की पूरी, समा के चावल की खिचड़ी और मखाने की खीर जैसे स्वादिष्ट फलाहारी व्यंजन बना सकते हैं। खास बात यह है कि इनमें से कई व्यंजन कम सामग्री में और कुछ ही मिनटों में तैयार हो जाते हैं।

आइए जानते हैं नवरात्र व्रत के लिए 10 फलाहारी व्यंजनों की आसान विधि।

1. साबूदाना खिचड़ी

सामग्री

एक कप साबूदाना, एक उबला आलू, दो चम्मच मूंगफली, एक हरी मिर्च, एक चम्मच घी या तेल, सेंधा नमक और नींबू का रस।

विधि:

1. साबूदाने को धोकर पर्याप्त समय तक भिगोएं और अतिरिक्त पानी निकाल दें।
2. कड़ाही में घी गर्म करके मूंगफली भून लें।
3. कटी हरी मिर्च और उबला आलू डालकर हल्का भूनें।
4. साबूदाना और सेंधा नमक डालकर धीमी आंच पर पकाएं।
5. साबूदाना पारदर्शी होने पर नींबू का रस मिलाएं और गर्मागर्म परोसें।



कुट्टू के आटे की पूरी

सामग्री

एक कप कुट्टू का आटा, एक उबला आलू, सेंधा नमक और तलने के लिए घी या तेल।

विधि:

1. उबले आलू को अच्छी तरह मैश कर लें।
2. इसमें कुट्टू का आटा और सेंधा नमक मिलाएं।
3. जरूरत के अनुसार थोड़ा पानी डालकर सख्त आटा गूंथ लें।
4. छोटी-छोटी लोइयां बनाकर प्लास्टिक शीट या बटर पेपर के बीच बेलें।
5. गर्म घी या तेल में पूरी को सुनहरा होने तक तलें। फलाहारी आलू की सब्जी के साथ परोसें।

सिंघाड़े के आटे का हलवा

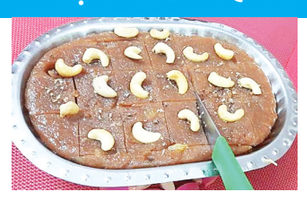

सामग्री

आधा कप सिंघाड़े का आटा, एक चौथाई कप घी, आधा कप चीनी, डेढ़ कप पानी और थोड़े कटे हुए मेवे।

विधि

1. कड़ाही में घी गर्म करें और सिंघाड़े का आटा डालें।
2. धीमी आंच पर लगातार चलाते हुए सुनहरा होने तक भूनें।
3. दूसरी ओर पानी गर्म करके उसमें चीनी घोल लें।
4. चीनी वाला पानी धीरे-धीरे आटे में डालें और लगातार चलाते रहें।
5. हलवा गाढ़ा होने पर मेवे डालें और गर्मागर्म परोसें।

मखाने की खीर

सामग्रीः एक लीटर दूध, एक कप मखाने, दो से तीन चम्मच चीनी और थोड़ी इलायची।

विधिः

1. मखानों को छोटे टुकड़ों में काट लें।
2. दूध को उबालकर धीमी आंच पर पकाएं।
3. मखाने डालकर लगभग 15–20 मिनट तक पकाएं।
4. दूध गाढ़ा होने पर चीनी और इलायची मिलाएं।
5. पसंद के अनुसार गर्म या ठंडा करके परोसें।



सत्यमेव जयते
राजस्थान सरकार

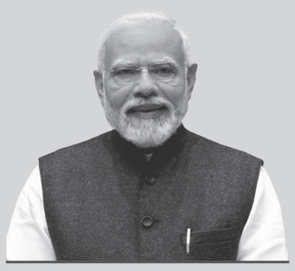

श्री नरेन्द्र मोदी
माननीय प्रधानमंत्री



श्री भजनलाल शर्मा
माननीय मुख्यमंत्री

राष्ट्रपिता
महात्मा गांधी जी
व पूर्व प्रधानमंत्री
लाल बहादुर शास्त्री जी
की जयंती पर शत-शत नमन



2 अक्टूबर 2026

"महात्मा गांधी जी का जीवन राष्ट्रसेवा, सादगी और कर्तव्यनिष्ठा की प्रेरणादायी मिसाल है। उनके आदर्श आज भी हमें स्वच्छ, सशक्त और आत्मनिर्भर भारत के निर्माण की दिशा में निरंतर आगे बढ़ने का मार्ग दिखाते हैं।"

"लाल बहादुर शास्त्री जी का जीवन सादगी, त्याग और राष्ट्रसेवा का प्रतीक है।
उनका अमर मंत्र 'जय जवान-जय किसान' आज भी हमें देशहित में कर्म और समर्पण की प्रेरणा देता है।"

भजनलाल शर्मा, मुख्यमंत्री

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, राजस्थान

राजस्थान संवाद



गोरखपुर में कायस्थ पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अजय शंकर श्रीवास्तव के नेतृत्व में चित्रांशजनों ने राष्ट्रपिता महात्मा गांधी एंव पूर्व प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री जी की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर नमन किया ।

▪ कायस्थ टुडे



सर्वेश श्रीवास्तव को ग्लोबल कायस्थ कॉन्फ्रेंस के दिल्ली प्रदेश का प्रदेश संयोजक मनोनीत किया है । कायस्थ टुडे



कायस्थ कल्याण समिति, जोधपुर द्वारा शास्त्री सर्कल पर भारत के पूर्व प्रधानमंत्री एवं कायस्थ समाज के गौरव लाल बहादुर शास्त्री जी की जयंती के अवसर पर उनकी प्रतिमा पर माल्यार्पण कर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की गई। •कायस्थ टुडे



आज खारघर ,नवीं मुंबई में विराट कायस्थ महासम्मेलन की आयोजन समिति ने पूर्व प्रधानमंत्री स्व० लाल बहादुर शास्त्री जी को भी श्रद्धांजलि दी । बैठक में ग्लोबल कायस्थ कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय महासचिव नवीन कुमार, प्रदेश संयोजक अनिल कुमार चंचल, प्रदेश महासचिव सुनील कुमार, प्रदेश उपाध्यक्ष राजेश कुमार श्रीवास्तव सहित अन्य गणमान्य लोगों ने अपने विचार रखे। ▪ कायस्थ टुडे

युवक-युवती परिचय सम्मेलन 20 दिसंबर को

कायस्थ टुडे

जयपुर। श्री चित्रगुप्त नवयुवक समिति (कायस्थ समाज की प्रथम सामुहिक विवाह सम्मेलन व परिचय सम्मेलन करने वाली संस्था) की एक मीटिंग संस्थान के प्रधान कार्यालय 184, गुलाब विहार कालोनी, सीताबाड़ी के पास, टोंक रोड सांगानेर जयपुर में हुई। मीटिंग में संस्थान के अध्यक्ष युगल किशोर नेहवारिया ने बताया कि कायस्थ समाज का युवक युवती परिचय सम्मेलन कायस्थों की बगीची, कल्याण जी का रास्ता, इन्दिरा बाजार व सामूहिक विवाह सम्मेलन 28 फरवरी रविवार को कायस्थों की बगीची, कल्याण जी का रास्ता,इन्द्रा बाजार के पास करना तय किया है अभी तक 06 जोड़ों ने सामूहिक विवाह सम्मेलन में शादी करने के लिए पंजीकरण कराया है ।

परिचय सम्मेलन अंतरराष्ट्रीय स्तर पर किया जाता है इस में देश विदेश से युवक युवती परिचय सम्मेलन में शामिल होते हैं ओर विदेश में रहने वाले युवक युवती ओन लाइन परिचय सम्मेलन में शामिल होते हैं श्री चित्रगुप्त नवयुवक समिति 43 वर्ष से सामूहिक विवाह सम्मेलन करवा रही है सैकड़ों रिश्ते तय हुए हैं।

दीपावली मिलन एवं अन्नकूट पंगत प्रसादी 15 नवम्बर को

जयपुर। कायस्थ टुडे । कायस्थ समाज सेवा संस्थान, श्री चित्रगुप्त ट्रस्ट एवं श्री चित्रगुप्त क्लब के संयुक्त तत्वावधान मे 15 नवम्बर को सायं 6.00 बजे से कायस्थों की बगीची, कल्याण जी का रास्ता, इंदिरा बाजार, जयपुर में दीपावली मिलन एवं अन्नकूट पंगत प्रसादी का कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा। कायस्थ समाज सेवा संस्थान के अध्यक्ष अनिल माथुर ,महासचिव एम बी माथुर,श्री चित्रगुप्त ट्रस्ट के अध्यक्ष डा. अमित माथुर,सचिव राजेश माथुर,श्री चित्रगुप्त क्लब के अध्यक्ष राजेश माथुर हेलक्या ,महासचिव राधा मोहन माथुर ने समाज बन्धुओं से अनुरोध किया है कि इस कार्यक्रम में अधिक से अधिक शामिल होकर सफल बनायें। अधिक जानकारी के लिए राजेश माथुर हेलक्या से मोबाइल नम्बर 9314932322 पर सम्पर्क कर सकते है।

डांडिया महोत्सव 24 अक्टूबर को

जयपुर। कायस्थ सभा जयपुर पश्चिम की ओर से 24 अक्टूबर को 6:00 से 9:00 तक खातीपुरा रोड स्थित फतेह निवास में डांडिया महोत्सव का कार्यक्रम किया जा रहा है। डांडिया महोत्सव में शामिल होने वालों से प्रत्येक व्यक्ति तीन सौ रूपए सहयोग राशि ली जायेगी और डांडिया कपल को स्वयं को लाने होंगे।

चित्रांश गरबा 2026

संस्कृति... संगठन और राष्ट्रसमर्पण का उत्सव

कायस्थ टुडे

भोपाल। माँ दुर्गा की आराधना, समाज की एकजुटता और राष्ट्र की उन्नति के संकल्प के साथ चित्रांश गरबा 2026 का आयोजन हम सभी के लिए यादगार रहा। मध्य प्रदेश शासन के कैबिनेट मंत्री एवं अखिल भारतीय कायस्थ महासभा के वरिष्ठ राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष विश्वास कैलाश सारंग तथा भोपाल की महापौर श्रीमती मालती राय की गरिमामयी उपस्थिति ने कार्यक्रम को विशेष गौरव प्रदान किया। सारंग ने इस मौके पर कहा कि माँ दुर्गा की आराधना, गरबा की उमंग और सांस्कृतिक परंपराओं की जीवंत छटा से सुसज्जित यह आयोजन हमारी समृद्ध विरासत, सामाजिक एकता और आपसी सौहार्द का सुंदर प्रतीक है।माँ जगदम्बा की कृपा सभी पर बनी रहे तथा समाज में प्रेम, सद्भाव और समृद्धि का संचार हो, यही मंगलकामना है।यह आयोजन केवल गरबा और डांडिया तक सीमित नहीं, बल्कि समाज को जोड़ने, प्रतिभाओं को प्रोत्साहित करने, मातृशक्ति की सहभागिता बढ़ाने और राष्ट्रसेवा के संकल्प को मजबूत करने का अवसर रहा।



मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने अंतर्राष्ट्रीय वृद्ध दिवस पर समाज सेवा के क्षेत्र में उल्लेखनीय सेवा के लिए मुकेश दत्त माथुर को राज्य स्तरीय सम्मान से पुरस्कृत किया गया। नगर निगम जयपुर में सहायक नगर नियोजन पद से रिटायर्ड मुकेश दत्त माथुर वर्तमान में सचिव ,शहीद मेजर आलोक माथुर मेमोरियल समिति एवं विभिन्न सामाजिक संगठनों से जुड़े हुए हैं। •कायस्थ टुडे

चित्रगुप्त धाम में 65वाँ युवक-युवती वैवाहिक परिचय सम्मेलन संपन्न

कायस्थ टुडे

ग्वालियर। कायस्थ सज के विवाह योग्य युवक युवतियों का 65 वां वैवाहिक परिचय सम्मेलन भगवान श्री चित्रगुप्त धाम सर्व देव मंदिर, कायस्थ छात्रावास, दौलतगंज, लश्कर, ग्वालियर में संपन्न हुआ। कायस्थ वैवाहिक मंच के तत्वावधान में यह परिचय यम्मेलन सम्पन्न हुआ ।परिचय सम्मेलन में लगभग डेढ़ सो बायोडाटा का वाचन हुआ एवं 30 युवक युवतियों ने मंच पर आकर अपना परिचय दिया। अभी तक इस परिचय सम्मेलन के द्वारा लगभग 2000 युवक युवतियां के रिश्ते हो चुके हैं ।



संस्था के अध्यक्ष अभय चौधरी ने कहा कि इस प्रकार के सम्मेलन समाज में पारिवारिक संबंधों को मजबूत करने के साथ-साथ युवक-युवतियों के सुखद वैवाहिक भविष्य की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। सचिव अरुण कुलश्रेष्ठ ने कहा कि कायस्थ वैवाहिक परिचय मंच द्वारा आयोजित इस सम्मेलन में समाज के लोगों से अपने परिवार के विवाह योग्य युवक-युवतियों के बायोडाटा जमा कराकर पंजीयन कराने तथा इस सामाजिक पहल में सक्रिय सहभागिता करने की अपील की गई।

कार्यक्रम का प्रारंभ भगवान श्री चित्रगुप्त जी की आरती पंडित राजेश्वर राव द्वारा करवाकर प्रारंभ किया गया

कार्यक्रम के आयोजन में एडवोकेट सुरेंद्र कुमार खरे नया संचालन किया।कार्यक्रम का आयोजन हकीम देवीप्रसाद रामप्यारी न्यास के अंतर्गत कायस्थ छात्रावास, दौलतगंज, ग्वालियर में किया गया। आकाश श्रीवास्तव ने समाज के सभी बंधुओं एवं बहनों के सहयोग के प्रति आभार व्यक्त करते हुए भविष्य में भी समाजहित में ऐसे आयोजनों को निरंतर जारी रखने की प्रतिबद्धता व्यक्त की।

कार्यक्रम में मुख्य रूप से उपस्थित एडवोकेट सुरेंद्र कुमार खरे अमित सक्सेना अमित श्रीवास्तव सुरेंद्र श्रीवास्तव हरी बाबू श्रीवास्तव श्रीमती तृप्ति भटनागर तनय श्रीवास्तव वर्षा श्रीवास्तव मनीष श्रीवास्तव कृष्णा सहित चित्रांश बंधुओं ने भाग लिया ।

नाहरगढ़ स्थित जयपुर वैक्स म्यूजियम अब एक नए अवतार में 'हिस्टोरिका

रेल परिक्रमा

जयपुर। हिस्टोरिका-स्टेप इनटू हिस्ट्री' महज वैक्स म्यूजियम नहीं, एक टाइम मशीन है - जहाँ आप महाराजा के दरबार से लेकर हाड़ी रानी के बलिदान तक को अपनी आँखों से जियेंगे, आपके चारों तरफ होगा - 25 लाख शीशों के महल से लेकर राजस्थान के पहले थियेटर तक का सफर...

जयपुर आने वाला पर्यटक अब सिर्फ महल और किले ही नहीं देखना चाहता, बल्कि इतिहास को जीना चाहता है। पर्यटकों की इसी बदलती सोच और इमर्सिव अनुभव की मांग को देखते हुए, नाहरगढ़ किले में स्थित प्रसिद्ध जयपुर वैक्स म्यूजियम अब एक नए कलेवर और नए ब्रांड नाम 'हिस्टोरिका - स्टेप इनटू हिस्ट्री' के साथ शुरू



होने जा रहा है । यह दुनिया का पहला मल्टी-एक्सपीरियंशियल हिस्ट्री म्यूजियम है, जो 300 साल पुराने नाहरगढ़ किले में स्थित है।

फाउन्डर अनूप श्रीवास्तव ने बताया कि जब उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी ने म्यूजियम का दौरा किया था। उन्होंने सुझाव दिया था कि यदि म्यूजियम में अनुभव को और बेहतर किया जाए तो इस विरासत में चार चांद लग जाएंगे और पर्यटक का अनुभव चौगुना हो जाएगा। उन्हीं के सुझाव को ध्यान में रखते हुए हिस्टोरिका इमर्सिव फिल्म की इस नई परिकल्पना पर काम किया गया है।*

पहली है राम प्रकाश टॉकीज। यह 1878-79 में महाराजा सवाई राम सिंह द्वितीय द्वारा बनवाए गए राजस्थान के पहले थियेटर की प्रतिकृति है। यहाँ मेगा स्क्रीन पर दो ब्लॉकबस्टर फिल्में 'मिस्ट्री ऑफ नाहरगढ़' और 'हाड़ी रानी' दिखाई जाएंगी। यह एक ऐसा अनुभव होगा जहाँ पर्यटक फिल्म देख नहीं रहा, बल्कि उस फिल्म का हिस्सा बन जाएगा। नाहरगढ़ आने वाले पर्यटक को पता ही नहीं होता कि यह किला महज पत्थरो से बनी एक इमारत नहीं है बल्कि इसमें कई गहरे राज, त्याग और अधूरे प्रेम की कहानी दफन है जो इस फिल्म को देखने के बाद उसको जानकारी होगी और ज्यादा ही गहन तरीके से वो महल को देखेगा । वहीँ हाड़ी रानी पर बनी फिल्म देखने के बाद उसका वैक्स के पुतले को देखने का नजरिया बदल जाएगा ।

दशहरा: केवल उत्सव नहीं, धर्म, सत्य और मानव मूल्यों की विजय का महापर्व

भारत की सांस्कृतिक परंपरा में अनेक पर्व ऐसे हैं जो केवल आनंद और उत्सव का अवसर नहीं होते, बल्कि जीवन को दिशा देने वाले प्रेरणास्रोत भी बनते हैं। दशहरा या विजयादशमी ऐसा ही एक महान पर्व है, जो बुराई पर अच्छाई, असत्य पर सत्य और अन्याय पर न्याय की विजय का उद्घोष करता है। यह त्योहार हमें याद दिलाता है कि चाहे परिस्थितियाँ कितनी ही कठिन क्यों न हों, धर्म और सत्य का मार्ग अंततः विजय तक ही पहुंचता है।दशहरा भारतीय जनमानस की आस्था, संस्कृति और नैतिक चेतना से गहराई से जुड़ा हुआ है। यह पर्व आश्विन मास के शुक्ल पक्ष की दशमी तिथि को मनाया जाता है और इसके पीछे निहित संदेश आज भी उतना ही प्रासंगिक है जितना हजारों वर्ष पूर्व था। आधुनिक भौतिकवादी युग में, जब समाज अनेक नैतिक और सामाजिक चुनौतियों का सामना कर रहा है, तब दशहरा केवल एक धार्मिक आयोजन नहीं बल्कि आत्ममंथन और सामाजिक परिवर्तन का अवसर बन जाता है।



पौराणिक मान्यताओं के अनुसार, इसी दिन भगवान श्रीराम ने लंका के अत्याचारी राजा रावण का वध करके धर्म की स्थापना की थी। रावण अपार ज्ञान, शक्ति और वैभव का स्वामी था, किंतु उसका अहंकार, अन्याय और दुराचार उसके विनाश का कारण बना। वहीं श्रीराम ने सत्य, मर्यादा, करुणा और कर्तव्यनिष्ठा का पालन करते हुए मानवता के सर्वोच्च आदर्श प्रस्तुत किए। इसलिए दशहरा केवल राम की विजय का उत्सव नहीं, बल्कि उन मानवीय मूल्यों का सम्मान है जो समाज को सभ्य और सशक्त बनाते हैं।दशहरा हमें यह भी सिखाता है कि व्यक्ति की महानता उसके ज्ञान या शक्ति से नहीं, बल्कि उसके चरित्र और आचरण से निर्धारित होती है। रावण की हार और राम की विजय इसी शाश्वत सत्य को स्थापित करती है। यह पर्व संदेश देता है कि अहंकार, लालच, क्रोध और अन्याय चाहे कितने ही प्रभावशाली क्यों न दिखाई दें, उनका अंत निश्चित है।

दूसरी ओर, देवी शक्ति की उपासना से जुड़ी मान्यताओं में भी विजयादशमी का विशेष स्थान है। माना जाता है कि मां दुर्गा ने नौ दिनों तक महिषासुर से युद्ध कर दसवें दिन उसका वध किया था। इसीलिए यह पर्व शक्ति, साहस और धर्म की विजय का प्रतीक माना जाता है। नवरात्र के उपरांत मनाई जाने वाली विजयादशमी हमें यह विश्वास दिलाती है कि जब संकल्प और सत्य का साथ हो तो कोई भी दुष्ट शक्ति अधिक समय तक टिक नहीं सकती।देशभर में दशहरा बड़े उत्साह और श्रद्धा के साथ मनाया जाता है। विभिन्न शहरों और कस्बों में रामलीला का मंचन किया जाता है तथा रावण, मेघनाथ और कुंभकर्ण के विशाल पुतलों का दहन किया जाता है। आतिशबाजी और जयघोष के बीच होने वाला यह दृश्य केवल एक परंपरा नहीं, बल्कि बुराई के अंत और अच्छाई की विजय का सार्वजनिक संदेश होता है। बच्चे, युवा और बुजुर्ग सभी इसमें बढ़-चढ़कर भाग लेते हैं और सामाजिक एकता का सुंदर उदाहरण प्रस्तुत करते हैं।

किन्तु आज आवश्यकता इस बात की है कि हम दशहरा को केवल पुतला दहन तक सीमित न रखें। हर व्यक्ति के भीतर एक रावण मौजूद होता है, जो कभी अहंकार के रूप में, कभी ईर्ष्या के रूप में, तो कभी स्वार्थ और लोभ के रूप में सिर उठाता है। यदि हम वास्तव में दशहरा मनाना चाहते हैं तो इन आंतरिक बुराइयों का दहन करना होगा। समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार, हिंसा, भेदभाव, नशाखोरी और नैतिक पतन जैसी समस्याएँ भी आधुनिक रावण के ही रूप हैं, जिनका अंत सामूहिक जागरूकता और नैतिक मूल्यों के माध्यम से किया जा सकता है।वर्तमान समय में दशहरा युवाओं के लिए विशेष प्रेरणा का पर्व है। यह उन्हें संघर्ष से घबराने के बजाय साहस, धैर्य और आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ने की सीख देता है। भगवान राम का जीवन इस बात का प्रमाण है कि कठिनाइयों और विपरीत परिस्थितियों के बावजूद आदर्शों को नहीं छोड़ना चाहिए।

मुगलों को चुनौती देने वाले बंगाल के वीर कायस्थ शासक थे महाराजा केदार राय

कायस्थ टुडे

जयपुर। महाराजा केदारनाथ देव राय (1561-1603 ई.) बंगाल के बारह भुइयां वंश(कायस्थ राजाओं) के सबसे शक्तिशाली और प्रसिद्ध शासकों में से एक थे, जिन्होंने मुगल आक्रमण का प्रतिरोध किया और बिक्रमपुर में एक स्वतंत्र साम्राज्य स्थापित किया। उन्होंने चार विनाशकारी युद्धों में मुगल-राजपूत सेनाओं को पराजित किया और तटीय क्षेत्रों में पुर्तगाली और अराकानी समुद्री डाकुओं का दमन करके बंगालियों की रक्षा की। उनके शासन के अंतर्गत आने वाले विशाल क्षेत्र में ढाका, बिक्रमपुर, कोमिला, सिलहट, नोआखली और चांदपुर का एक बड़ा हिस्सा शामिल था।

केदार राय का जन्म बिक्रमपुर में हुआ था और उन्हें अपने पिता यादव राय के माध्यम से देबबांग्शी बंगाली कायस्थ वंश विरासत में मिला था। उनके पूर्वज निम राय संभवतः सेन काल में बिक्रमपुर के आरा फुलबरिया में बस गए थे और उन्होंने भुइयां की उपाधि प्राप्त की थी। केदार राय की राजधानी श्रीपुर थी, जो अब शरीयतपुर जिले में कालीगंगा नदी के तट पर स्थित है। उनका राज्य पद्मा नदी के दोनों किनारों पर इद्रकपुर, इदिलपुर, केदारपुर और चांदपुर सहित एक विशाल क्षेत्र में फैला हुआ था। हालाँकि, श्रीपुर सहित उनके राज्य के कई स्मारक पद्मा नदी के कटाव में नष्ट हो गए हैं।

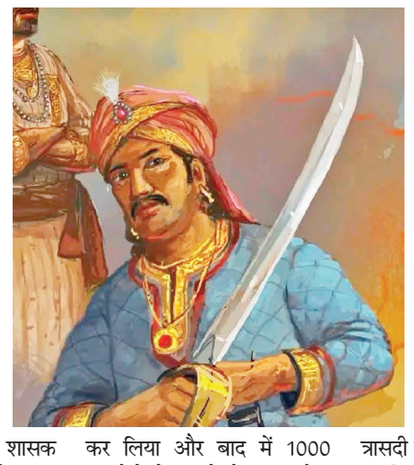

केदार राय एक कुशल शासक और योद्धा थे। उन्होंने एक मज़बूत नौसेना का निर्माण किया और पुर्तगाली नाविक डोमिंग्वेज़ कार्वाल्हो को उसका सेनापति नियुक्त किया। उनकी नौसेना ने संदीप में मुगलों के विरुद्ध एक विनाशकारी युद्ध जीता। उन्होंने अराकान राजा मेंगराजगी के 150 युद्धपोतों के हमले को विफल कर दिया, जिनमें से 140 पर कब्ज़ा कर लिया और बाद में 1000 युद्धपोतों के हमले में मुगल सेना को पराजित किया। उन्होंने कालिंदी नदी में मुगल सेनापति मानसिंह के विरुद्ध मंदा राय के नेतृत्व वाली मुगल सेना को भी पराजित किया, जहाँ नदी का पानी मुगल सैनिकों के रक्त से सना हुआ था।

केदार राय की शुरुआत में ईसा खान से मित्रता थी और उन्होंने अराकान राजा के विरुद्ध मिलकर युद्ध लड़ा। लेकिन ईसा खान के साथ उनका रिश्ता तब दुश्मनी में बदल गया जब ईसा खान ने केदार राय की विधवा पुत्री स्वर्णमयी से जबरन विवाह कर लिया। इस घटना से क्रोधित होकर केदार राय ईसा खान ने कालागछिया किले पर आक्रमण कर उसे नष्ट कर दिया और यहाँ तक कि उनकी राजधानी पर भी आक्रमण किया।

केदार राय का जीवन त्रासदी से भरा था। मुगल सेनापति मानसिंह के साथ चौथे युद्ध में फतेहजंगपुर में उनकी मृत्यु हो गई।कहा जाता है कि युद्ध के नौवें दिन, उन्हें तोप का गोला लगा और बाद में कैद में ही उनकी मृत्यु हो गई। एक अन्य विवरण के अनुसार, छिन्नमस्ता की साधना और पूजा करते समय एक हत्यारे ने उनकी हत्या कर दी। उनकी मृत्यु के बाद, मुगलों ने उनके राज्य को लूट लिया और श्रीपुर पद्मा नदी में डूब गया।

केदार राय की स्मृति विक्रमपुर के विभिन्न स्थानों में फैली हुई है। उन्होंने श्रीपुर में दिगंबरी देवी दिघी, केशव मायेर दिघी और राजबाड़ी मठ सहित कई मंदिर और तालाब बनवाए। उनके द्वारा स्थापित भुवनेश्वरी मूर्ति आज भी नदिया के लखुरिया में सुरक्षित है। हालाँकि, पद्मा नदी के क्षरण के कारण उनकी राजधानी और उनकी कई कृतियाँ नष्ट हो गईं, जिसके लिए इस क्षेत्र में पद्मा नदी को 'कीर्तिनाशा' के नाम से जाना जाता है।

केदार राय की वीरता और देशभक्ति बंगाल के इतिहास में अमर है। उन्होंने बारह भुइयां लोगों को एकजुट करने की कोशिश की, लेकिन उनके बीच की प्रतिद्वंद्विता के कारण, अंततः उन्हें सफलता नहीं मिली। फिर भी, अपनी प्रजा के प्रति उनकी निष्ठा, उनके शासन और मुगलों के प्रति उनके प्रतिरोध ने उन्हें बंगाल के एक अजेय नायक के रूप में स्थापित किया है।

26वीं पुण्यतिथि पर आपको शत-शत नमन



(25 अक्टूबर, 2026)
स्मृतिशेष श्री जीवनलाल जी माथुर

आपकी सादगी,स्वाभिमान एंव त्यागमय आदर्श जीवन की मधुर स्मृतियों के साथ भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करते है ।

श्रद्धानवत
परिवारजन, कायस्थ मोहल्ला, किशनगढ़
एवं कायस्थ टुडे, जयपुर

मोबाइल नं. 9772781450, 9829066979

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं **मुद्रक योगिता माथुर** द्वारा 90/132, आशीर्वाद, अग्रवाल फार्म, मानसरोवर, जयपुर से प्रकाशित एवं **अम्बर आफसेट प्रा. लि.,** डीएल टावर, 3 संस्थानिक क्षेत्र, जवाहरलाल नेहरू मार्ग, जयपुर से मुद्रित
संपादकः योगिता माथुर (पीआरबी एक्ट के तहत कायस्थ टुडे में प्रकाशित सामग्री के लिए उत्तदायित्व)